सभी घोड़े राजा के

माइकल फोरमैन

हिंदी: प्रमोद कुमार मेहता

सभी घोड़े राजा के

माइकल फोरमैन

हिंदी: प्रमोद कुमार मेहता

बहुत पहले, एशिया के दूर पठारों पर एक राजकुमारी रहती थी। वह दूध जैसी गोरी, सुनहरे बालों वाली, गुलाबी छोटी लड़की नहीं थी जैसा राजकुमारियों को होना चाहिए। यह एक बड़ी लड़की थी। और सांवली। उसके लिए, महल में ज़िंदगी बोरिंग थी, और वह जितना हो सके उतना समय बड़े-बड़े घास के मैदानों में घूमने में बिताती थी।

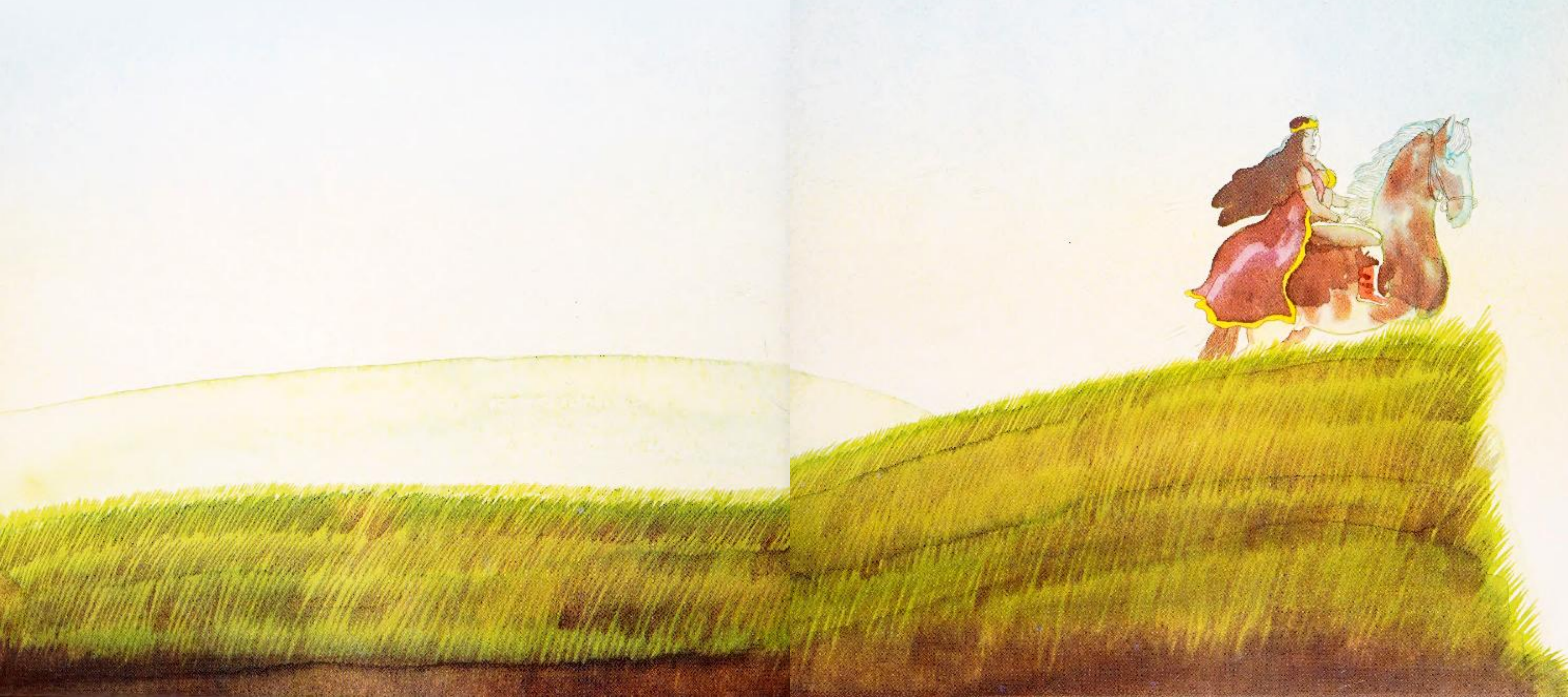

उसके पिता, राजा, उसकी शादी करवाने के लिए बेचैन थे। वे सोचते हैं कि किसी अमीर आदमी से उनकी बेटी की शादी हो जाए और वह राजा को धोखा भी न दे ।

लेकिन जब देश के सबसे अमीर आदमी को राजकुमारी से अपने होने वाले पति के तौर पर मिलवाया गया, तो वह हँस पड़ी — और उसने उसे नीचे फेंक दिया!

“मुझे ऐसा पति नहीं चाहिए जिसे मैं नीचे फेंक सकूँ,” वह चिल्लाई।

“और मुझे परवाह नहीं कि वह कितना अमीर है! मुझे ऐसा आदमी चाहिए जिसकी मैं इज्ज़त कर सकूँ। मुझे ऐसा आदमी पति के रूप में चाहिए जो मजबूत हो, कुश्ती लड़ सके और ताकतवर हो...।”

फिर राजा, अपनी बिगड़ैल गुस्सेल बेटी से अपना पीछा छुड़ाने के लिए पहले से कहीं ज़्यादा बेचैन होने लगा, उसने पूरे देश में अपने दूतों को भेजकर बड़ी घोषणा करवाई कि:

“महामहिम, राजा, अपनी बेटी, राजकुमारी की शादी का वादा करते हैं, उस आदमी के साथ जो उसके साथ कुश्ती में जीतेगा।

...और जो भी आदमी हार जाएगा, वह राजा को हर्जाना बतौर सौ घोड़े देगा।”

देश के सभी योग्य पुरुष महल में आने लगे, और राजकुमारी से कुश्ती लड़ने का मौका मांगने लगे।

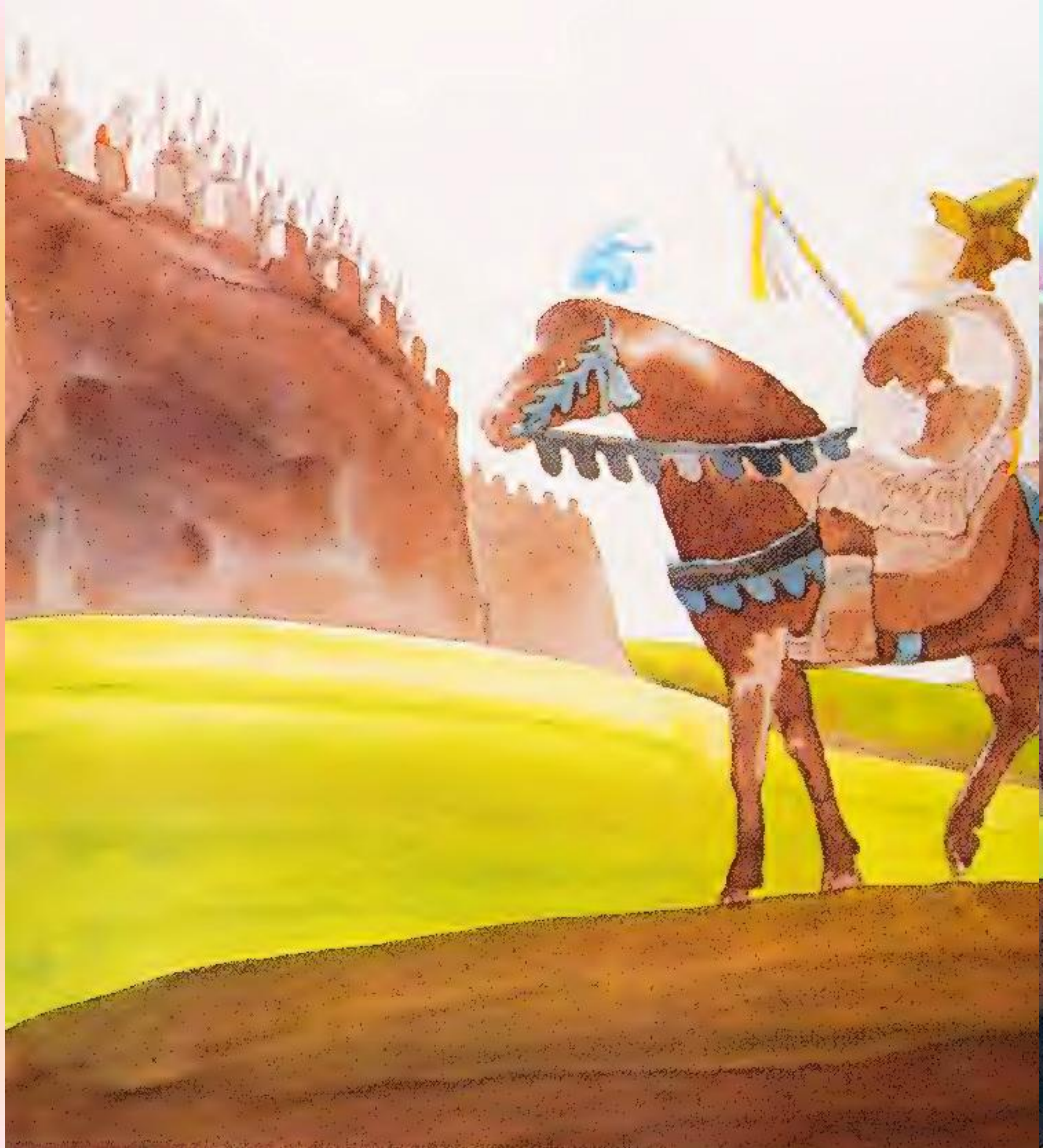

एक बड़ा रिंग बनाया गया, और अगले कुछ हफ़्तों में राजा की शर्त अनुसार एकत्रित हुए लोगों को लड़ने का मौका मिला। एक-एक करके, सभी का लगभग एक जैसा ही हाल हुआ।

क्योंकि वो गलत सोचते थे, आखिरी में वे घायल हुए: विकृत स्थिति में, कुचले हुए, और हार जाने के कारण अंत में 'रिंग से बाहर फेंक दिए गए।'

उक्त घटना के बाद.....

राजा के अपने अस्तबल को ओर बड़ा करवाया ताकि अधिक संख्या में नए घोड़ों को लाया और रखा जा सके।

राजा ने फिर एक ओर प्रयास किया राजा ने अपनी बेटी के लिए संभावित पति की तलाश में दूर और अनजान देशों तक में अपने दूत भेजे।

हर दिन, बहुत अमीर नौजवान दुनिया के लगभग चारों कोनों से आते थे। कुछ लोग हफ़्ते भर वर्जिश करते थे, शहद खाते थे लेकिन शराब नहीं पीते थे, जब तक कि वे सबसे अच्छी हालत में नहीं आ जाते थे।

लेकिन आखिर में वे सब हार गए, कुचल गए, घायल हो गए, और रिंग से बाहर फेंक दिए गए।

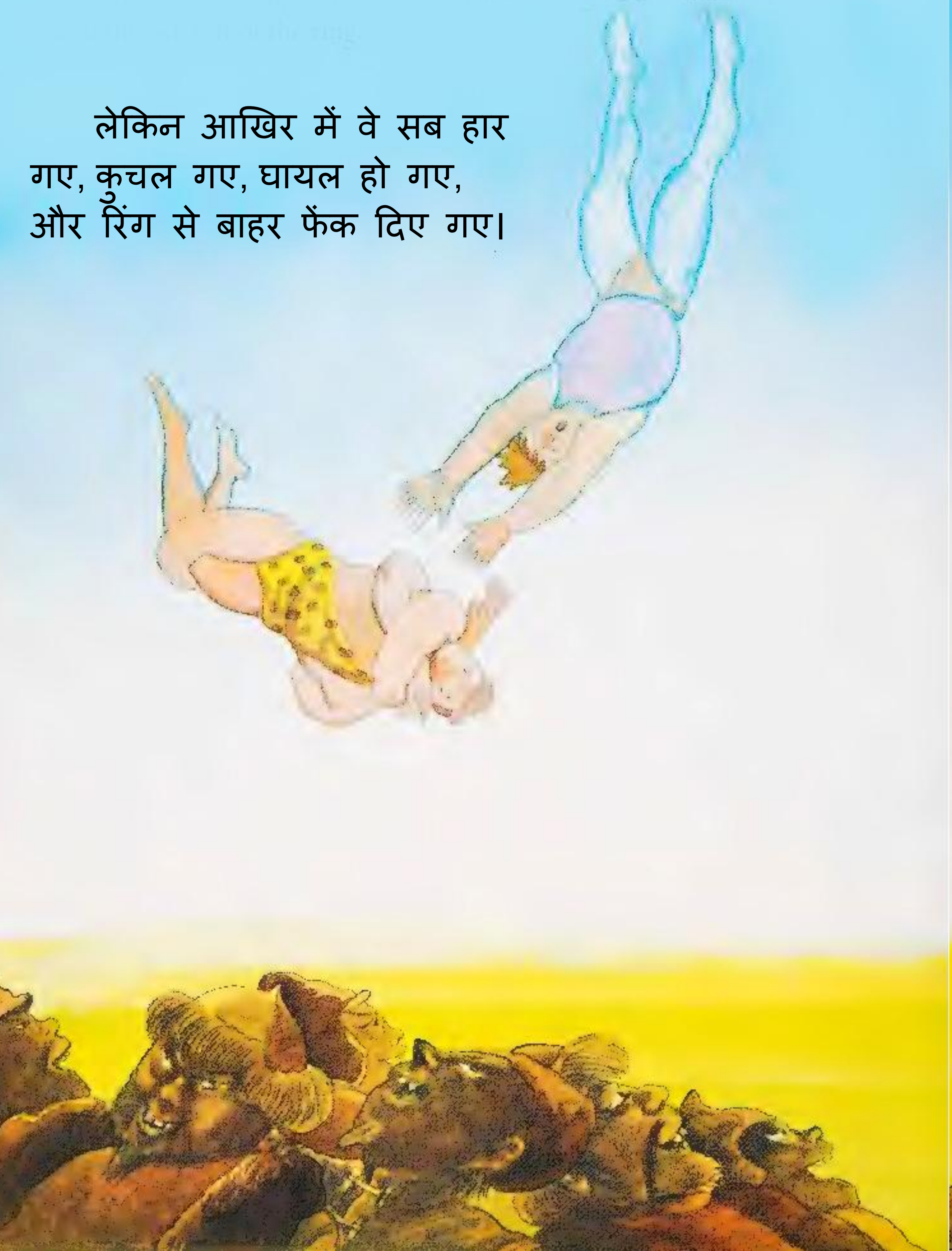

फिर एक दिन एक बहुत हट्टा-कट्टा और सुंदर नौजवान आया। उसने बहुत अच्छे कपड़े नहीं पहने थे लेकिन उसकी चौड़ी भूरी बाहें उसकी मेहनती, ज़िंदगी बताती थीं।

"महाराज? उसने राजा से कहा। "मैं एक गरीब लकड़हारे का बेटा हूँ। मेरे पास शर्त लगाने के लिए घोड़े नहीं हैं, लेकिन मैं राजकुमारी से कुश्ती लड़ने का मौका माँगता हूँ।"

राजा खुशी से पागल हो गया। क्रोधी होकर और चिढ़कर उसने सोचा..... "बेशक," ।

शायद इस बिगड़ैल "राजकुमारी को लकड़हारे का बेटा ही जीत सकता है। और इसे एक लकड़हारे के साथ लकड़हारा बनना ही लगता है सही रहेगा।"

लड़ाई के दिन का उदय हुआ और भीड़ तुरंत समझ गई कि यह कुछ खास था।

उन्होंने राजकुमारी की ऊँची आँखों से उस युवक का मूल्यांकन करते हुए देखा।

'वह वास्तव में एक सुंदर साथी था!'

वे एक बड़े आलिंगन में मिले, और एक-दूसरे की बाहों में निश्चल खड़े रहे।

भीड़ शांत थी।

राजकुमारी घोड़ों की बेसब्री से पैर पटकने की आवाज़ सुन सकती थी, उसने युवक की ओर देखा।

.. फिर राजकुमारी ने उस नवयुवक को इधर घुमाया, उधर घुमाया और फिर उसे, कुचलकर भीड़ के बीच में फेंक दिया।

फिर राजकुमारी रिंग से निकलकर अपने घोड़े की पीठ पर चढ़ गई और घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए लहराते घास के मैदान में जाकर अदृश्य हो गई।

राजा के सैकड़ों-हजारों घोड़ों ने राजकुमारी का पीछा किया।

बाद में उसका कुछ पता नहीं चल पाया, कहते हैं कि उस राजकुमारी और उसके घोड़ों के झुंड किसी विशाल महासागर के पानी की तरह पूरे एशिया में इधर-उधर फैल गए।

और कई रातों को वे आवाजें आज भी, राजाओं के बुरे सपनों और राजकुमारीयों के सपनों में सुनाई देती हैं।